अंतरा-शब्दशक्ति

आखर मीत

(काव्य संग्रह)

चित्राकन- अभीषेक बौड़ाई

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

आखर मीत

(काव्य संग्रह)

(कमल वीथि पुष्प-8)

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN-978-81-937811-0-4

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

मूल्य: ६५.०० रुपये

आवरण चित्र: अभिषेक बौड़ाई

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Akhar meet by Dr.Bharti Verma Baurai'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

कुछ अपने आपसे

अम्मा जी श्रीमती चंदा देवी बौड़ाई
बाबा जी श्री हरिहर आनंद बौड़ाई जी को
सादर समर्पित

कहीं से भी आरंभ करना चाहूँ, स्मृतियों के नगर में प्रवेश किये बिना कुछ भी सोचना-करना, लिखना संभव ही नहीं हो पाता। जब इस नगर में प्रवेश कर गलियों में विचरना आरंभ करती हूँ तो किसी चलचित्र की तरह विगत के चित्र आँखों के सम्मुख आने लग जाते हैं।

अक्षरों से मेरा नाता तभी जुड़ा होगा जब माँ और पापा ने अक्षर ज्ञान करवाने के क्रम में स्वर-व्यंजनों से मेरी पहचान करवानी आरंभ की होगी। पापा बताया करते थे कि जब बचपन में वो पुस्तक लेकर मुझे पढ़ाते और कहते कि बोलो एे से एेनक, तो मैं तुरंत कहती..इसे चश्मा भी कहते हैं, इसी तरह छ से छतरी, तो इसे छाता भी कहते हैं... और इसी तरह हर अक्षर के लिए मिलता-जुलता कोई न कोई शब्द, जो मैं सुनती थी, बोलने में पीछे न रहती। अक्षरों से मित्रता की ओर बढ़ते ये मेरे छोटे-छोटे कदम ही तो थे.... मुझे तो ऐसा ही लगता है।

बाद में पापा की पुस्तक की अलमारियों को उत्सुकता से देखना मेरा सबसे प्रिय काम था। जब पढ़ने की समझ बढ़ी, कविता, कहानियाँ, उपन्यास पढ़ने में मन लगने लगा तो पत्रिकाएँ निकाल कर पढ़ने लगी। उस समय मैंने एक कहानी पढ़ी थी। जिसमें संतान न होने पर कहानी की पात्र ने बेरी के पेड़ को अपनी संतान मान कर पाला था। पर ईर्ष्या वश हाड़ी राम नाम के पात्र ने उसे काट डाला। उस कहानी ने मेरे अति संवेदनशील मन को इतना प्रभावित किया कि पढ़ कर रोना तो आया ही, कई महीनों तक मैं अपने पापा से यही एक प्रश्न पूछती रही कि हाड़ी राम ने बेरी क्यों काटी थी? आज भी वह कहानी मेरे मन में उसी तरह अंकित है, बस मेरे उस प्रश्न का उत्तर देने वाले मेरे पापा नहीं हैं।

अंतर्मुखी स्वभाव होने के कारण मैं मितभाषी भी हो गयी थी,पर सोचती बहुत थी। कब पापा को देखते-देखते कागज-पैन मेरे विशेष सामान बन गये और मैं अपनी अनुभूतियों को शब्द देने लगी.... पता ही न चला। आखर मेरे सच्चे मीत बन गये। जो मेरे साथ अपनी मित्रता इतनी निष्ठा से निभा रहें हैं, तो मुझे नहीं लगता कि ये साथ कभी टूटेगा।

सुख, आनंद के क्षणों में ये आखर मीत साथ हँसे तो वेदना-पीड़ा के सघन क्षणों में इन्होंने ही मुझे संभाला भी, निराशा के अंधेरों से निकाल कर पुनः जीने की आशा से परिपूर्ण किया, साथ चल कर शक्ति प्रदान की। आखर मीत न बनते तो आज मैं जो हूँ वो नहीं होती। ये माँ भी है मेरी,पिता भी हैं और मीत भी। तीनों भूमिकाएँ निभाते हुए मेरे साथ हैं, तभी तो मैं भी हूँ।

इनका-मेरा साथ तभी छूटेगा जब मेरी साँस का मुझसे साथ छूटेगा। तब तक आखर मीत के साथ सृजन और जीवन का अविराम प्रवाह चलता रहेगा।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

अनुक्रमणिका

1. संगिनी	7
2. कहाँ है...	7
3. प्रश्न	8
4. नया करें...	8
5. जो जीवन में	8
6. संसार	8
7. दुख	9
8. कुछ न करें	9
9. सम्बन्ध	10
10.शक्तिरूपा!	10
11.मेरा तिरंगा	11
12.अहोई आठे	12
13.लड़कियाँ	12
14.क्या.....?	13
15.बचपन	13
16.इस शहर की	14
17.चक्र	15
18.योग दिवस	15
19.दे दो...	16
20.पर्यावरण दिवस	16
21.बहुत बुरा है	17
22.नहीं.....	17
23.चलो सभी एक पेड़ लगाएं	18
24.पानी और वाणी	19

25.जिसके लिए... 19
26.पाते,. 19
27.जाने कैसी,.. 19
28.नव वर्ष 20
29.बालदिवस 2015 20
30.एक बहाना...! 21
31.जन्मदिवस 22
32.चल उदासियाँ छोड़.... 23
33.मैं हिमालय 24
34.समय से पहले 25
35.मन चरवाहा 25
36.यही कहें.... 25
37.रिश्ते 26
38.धनतेरस 26
39.हो ऐसी हर बार दिवाली 26
40.उत्तराखंड 27
41.नया सूरज उगायें 28
42.कुछ दिन 28
43.गुलाब 29
44.जीवन 29
45.सीमायें 29
46.हाथ 29
47.अंदाज 30
48.पता ही न चला 30
49.दोस्ती 31
50.मसूरी 32
51.लक्ष्मण रेखा 32

संगिनी

मैं हूँ संगिनी
अपने प्रेम, विश्वास
और समर्पण की
जिसने हौले से
दस्तक देकर
छुआ मेरे घर और
मन का द्वार
गुदगुदा दिया जिंदगी को,
तभी तो खिली बुरांस सी
मनचली हिरनी बन
ढूँढने चली हूँ
अपना पूरा आकाश
अपनी अस्मिता के साथ...
अपनी एकरस दुनिया में
ताजगी का झोंका लाने
विस्तार देने अपने पंखों को
आत्मविश्वास के साथ
बुलंद हौसलों के साथ।

कहाँ है...

सब रिश्ते बाजार हुए अब
इन रिश्तों में जान कहाँ है
मेरी तेरी इस दुनिया में
जरा बताओ देश कहाँ है
इंसानों की इस बस्ती में
अब सच्चा इंसान कहाँ है
दिखता था जो दुःख सुख में
ऐसा वो अपना दोस्त कहाँ है
बड़े बड़े वादें और क़समें
उनमें रहता प्यार कहाँ है
मिट्टी में मिलना है सबको
पर मिट्टी से प्यार कहाँ है
बड़े बड़े घर और छोटे मन
ऐसे इंसानों में आन कहाँ है
कहने को है इंसानी बस्ती
पर दिखते सब हैवान यहाँ है
जो रहे सदा बन कर आशीष
उन बुजुर्गों का सम्मान कहाँ है

प्रश्न

कौन मुझे आगे ले जाये
कंटक चुन कर राह बुहारे
उच्च शिखर चढ़ने को आतुर
हिंदी अपने पंख पसारे
अपने पथ पर जूझ रही
प्रश्न सभी से पूछ रही है
मेरी इस प्रगति यात्रा में
क्या तुम मेरे संग चलोगे
कहीं गिरी, अटकी, फँसी
क्या तुम मेरी बाँह गहोगे?

———————

जो जीवन में

जीवन में
जब भी कभी कमजोर पड़ें
खुलें केवल वहाँ
जो सर्वशक्तिमान है
वह सुनेगा, चुप रहेगा
दुख हरेगा धीरे से
और हमें पता भी नहीं चलेगा,
उससे बढ़ कर
विश्वसनीय दूसरा कोई नहीं।

———————

नया करें...

कुछ नया करें कुछ नया जियें
कुछ अलग लिखें, अलग दिखें
हो प्रेरित जिससे जन मानस
वह राग रचें, वह आग रचें
अब छोड़ रूढ़ियों की दुनिया
सच करने सपनों की बगिया
हमकदम बनें अपनीं के संग
चल चलें, उड़ें, उड़ते ही चलें।

———————

संसार

रंगों का संसार भी
बड़ा विचित्र है
जीवन में
अच्छा हो तो
सब रंग दिखते हैं
बुरा हो तो
काले के अतिरिक्त
सब रंग न जाने कहाँ
तिरोहित हो जाते हैं।

———————

दुख

दुख में
इंसान सदा
अकेला क्यों होता है?
साथ होता है बस वह कमरा
जिसमें वह लेटा रहता है
बाकी कमरे पराये लगते हैं
क्योंकि वह उनमें जाता नहीं
या जा पाता नहीं,
तब याद आते हैं
वो कुछ खास अपने
जो पास थे पर अब नहीं हैं,
वे अपने भी याद आते हैं
जो हैं, पर आते नहीं
कुछ पराये,कुछ अपने
आते हैं मिलने
दुख से शुरू हो बातें
राजनीति में फँस जाती हैं...
दुख देखता है
आँखें बंद कर
कोशिश करता है सोने की,
पर, उसे पता है
नींद आयेगी नहीं
वह कोसों दूर है
उसकी भरी आँखों से।

———————

कुछ न करें

कुछ न करें
बस यूँ ही लेटें
बैठें, घूमें और बतियायें
इधर-उधर की...
चाय पियें
पर कप न समेटें
बिखरा रहने दें
सब यूँ ही....
एकरसता का
जीवन झटकें
अलमारी से एलबम ढूँढें
जीवन की
जिन यादों पर
धूल पड़ गयी
जाने कब से
झाड़ें उसको
उनमें डूबें और उतराएँ....
कहाँ है जाना
यह बिन सोचे
निकल पड़ें
अनजाने पथ पर,
गँवाने को
जाने-पहचाने
पाने को अनजाने सुख!

———————-

सम्बन्ध

सम्बन्ध हैं
तो उनमें
ऊष्मा भी दिखे,
सम्बन्ध हैं
तो उनके
कायदे-कानून
भी लिखें,
सम्बन्ध हैं
तो उन्हें जियें
कम से कम
सम्बन्धी से
तो दिखें।

———————

शक्तिरूपा!

शक्तिरूपा!
हर घर में है वास तुम्हारा
छोटे-बड़े सभी पर
है अशेष आशीष तुम्हारा...
दिया सभी कुछ तुमने हमको
फिर भी चाहें
और थोड़ा सा..
विकृति का
साम्राज्य दिनोंदिन
सुरसा जैसा फैल रहा
उनमें पलते
महिसासुरों का
मर्दन करने आओ न!...
सदबुद्धि दो
महिसासुरों से
स्वयं ही निबटें
ऐसी शक्ति देकर जाओं न!..
नव उड़ान
नव उमंग-स्वप्न संग
धन-धान्य से पूरित करके
हर्ष बाँट कर जाओ न!..
कह न सकी जो
अब तक तुमसे
जाते-जाते अब तुम
स्वयं ही समझ जाओ न!

———————

मेरा तिरंगा

स्वतंत्रता के
मधुर स्वप्न को
देखा जिन्होंने
पूरा करने को
जीवन अपना
दिया जिन्होंने
आज उन्हीं के
स्वेद-कणों पर
अभिमान से
मेरा तिरंगा
मुक्त गगन में
फहर रहा है....!
अपनी आशा
अपने सपनों की
थाती सौंपी जिन्होंने
अगली पीढ़ी को
आशा की वही
स्वर्णिम किरण लिए
उन सपनों की आग लिए
विकास-रंग का राग लिए

मेरा तिरंगा
मुक्त गगन में
लहर रहा है....!!
कुछ सपनों में रंग भर गये
कुछ देख रहे रंगों की राह
रहे न कोई भूखा घर में
सिर पर सबके छत हो
निकले दिल से कोई न आह
देश हमारा बढ़ता जाये
इतना आगे इतना आगे
पीछे मुड़ने को मिले न राह
देशभक्ति की आग लिए
प्रेम-विश्वास का राग लिए
आगे बढ़ता देश मेरा
किसी के रोके अब न रुकेगा
मेरा तिरंगा
मुक्त गगन में
फहर-लहर कर
इठला-इठला कर
कह रहा है....!!!

अहोई आठे

माँ अहोई
आ रही घर
देने अपना आशीर्वाद
फूले-फलें सभी के बच्चे
घर में सदा रहे उजास।
हर बच्चा
फैलाए सद्‌गुण
अपने चारों ओर
दीर्घायु बन
सुख बरसाए घर में
जिसका हो न ओर -छोर।
अहोई माँ मन की कोमल
दुःख सबका हरती है
जो ध्यावे मन से इनको
आँचल खाली
कभी न रखती है।
जैसे आती हो हर बार
देने सबको खुशियाँ अपार
ऐसे ही हर वर्ष आना
प्यार, आशीर्वाद, वरदान
सभी को, हर सूने
घर में खुशियाँ
बरसा कर जाना।
माँ अहोई
अगले वर्ष फिर आना।

———————

लड़कियाँ

लड़कियाँ
अंधेरे से
थोड़ा डरती हैं
पर
उसे चीरने का
साहस भी रखती हैं,
सपने देखती हैं
सपने जीती हैं
उन्हें पूरा करने को
उड़ान भरने का
हौसला भी रखती हैं...
लड़कियाँ
उजाले की किरण हैं
अपनी खिलखिलाहट से
चौतरफा उजाला बिखेरती हैं
ऊन से सलाइयों पर
भविष्य बुनती है...
सपनों की खेती करने
आसमान की ऊँचाइयों को छूने
तलाश रहीं हैं
भयमुक्त जमीन
और आसमान
जहाँ बेखौफ
चल सकें
उड़ सकें लड़कियाँ!!

———————

क्या.....?

मन की विकृतियाँ तो बनी रहीं
फिर रावण व्यर्थ जलाना क्या?
मन के रावण का अंत न हो
फिर दशहरा व्यर्थ मनाना क्या?
न राम बनें, न रावण बनें
बन सकें तो बस इंसान बनें
नेकी पर चलने का प्रण लें
यूँ व्यर्थ ही चलते जाना क्या?
अच्छाई और बुराई में जब
भेद समझ न पाएँ हम,
काले-सफेद अक्षरों में उलझ
अपने मन को भरमाना क्या?
सत्य और असत्य के मध्य
खिंची एक महीन रेखा भर,
उस रेखा को देख न पाएँ तो
औरों को फिर समझाना क्या?
ज़रा देखो अपने चारों ओर
कितने रावण हैं घूम रहे,
रोको उनको,और स्वयं रुको
यूँ व्यर्थ में गाल बजाना क्या?
उपदेश न दो तुम औरों को
स्वयं करने की पहल करो,
करने-रुकने की उलझन में
ऐसे ही समय बिताना क्या?

बचपन

बचपन की वो अनुपम यादें
नंदन, पराग, चंपक के साथ,
बालभारती तकिए के नीचे
रख कर काटी पूरी-पूरी रात।
इक्की - दुग्गी, पाँच पथरी
गिल्ली-डंडा, छुपम-छुपाई,
गौरैया पकड़ी जाने कितनी
और पतंगें भी खूब उड़ाई।
तुन के सूखे पत्ते बटोर कर
ढेरी अपनी यूँ बड़ी बनाते,
उनमें आग लगा कर भूने
आलू नमक लगा कर खाते।
अब का बचपन भारी बस्ते
कंधे पर लादे सिसक रहा है,
कहना तो चाहे है पर क्यों वो
कुछ कहने से झिझक रहा है।
औरों के सपने ढोने में देखो
अपने सपने रह गए पीछे,
एक कदम है आसमान में
और एक रहा धरती पर नीचे।
किसे कहें जो तुम चाहते हो
वह हमने तो सोचा ही नहीं,
इस उलझन में हम सबके
स्नेह-तार टूट न जाएँ कहीं।

इस शहर की

इस शहर की हवा बदल गई कुछ ऐसी
देखो तो अब लोग यहाँ रोज़ नहीं आते।

कितना मज़ा था पहले चाय-पकौड़ों में
जो अब पिज्ज़ा-बर्गर में भी नहीं पाते।

पैदल-साइकिलों पर सब आते थे घर में
अब गाड़ियाँ हैं, तब भी लोग नहीं आते।

मोबाइल,मॉल,होटल तक सीमित हो गए
हाय,हैलो से आगे शब्द कहे नहीं जाते।

शादी,किटी और मौत पर ही मिलते अब
ये न होते तो शायद मिल ही नहीं पाते।

मानवता होती है कितनी शर्मसार तब
जब गिरा हो कोई,और लोग चले जाते।

वक़्त भी कैसा बदल गया है देखो तो
बुज़ुर्ग भी देखो घर में नज़र नहीं आते।

———————-

चक्र

पति
बेटा-बेटी
सबके सपने अपने,
दुनिया अलग-अलग हैं,
इन सबसे जुड़ी पत्नी-माँ
जो थी बेटी
कभी किसी की
उन यादों के छोर को पकड़े
जीवन-संबल ढूँढ रही है...
सर्वस्व तिरोहित
करके अपना
अपने टूटे-बिखरे
सपनों के ढेर पर बैठी
प्रश्न स्वयं से पूछ रही है...
क्यों मेरा
कहीं कोई
जिक्र नहीं है?
अपने काम
पूर्ण होने पर
किसी को मेरी
क्यों फिक्र नहीं है?
क्या जीवन का
चक्र यही है.....???

योग दिवस

स्वस्थ यदि रहना है तो
योग जीवन में अपनाओ
इसको जीवन-अंग बना कर
रोगों को दूर भगाओ
स्वस्थ शरीर में
स्वस्थ मन का जब निवास होगा
स्वस्थ विचारों
सदकर्मों का अजस्र प्रवाह बहेगा
स्वयं करना औरों को भी प्रेरित
करना
जब सबका लक्ष्य बनेगा
तभी देश का हर जन
स्वस्थ सुखी बन नव उपनाम गढ़ेगा
ब्रह्म मुहूर्त में उठ
स्नान-ध्यान कर
सूर्य नमस्कार का
पक्का नियम बनायें
योग करें और रोज करें
अपना यह धर्म बनायें
स्वस्थ देह लेकर सत्कर्म करें कुछ
ऐसे
घर, समाज और देश
सभी गर्वित हों जैसे
योग प्रसन्नता की कुंजी है
सबको समझाना है
स्वस्थ नागरिक बन सबको
राष्ट्र-निर्माण में जुट जाना है।

दे दो...

सबके लिए जिया बहुत
किया बहुत कुछ
सहा बहुत कुछ,
अब कुछ पल अपने मन से
अपने लिए बिता लो...
जीवन की वो अनगिन खुशियाँ
जिनको छोड़ दिया था तुमने
कर्तव्य-धर्म की
पथरीली-कंटीली राहों में
वो सब तुमसे पूछ रहीं हैं
क्या तुम उनसे नहीं मिलोगी.....?
हर पल औरों के हित जीना
अपनी भी परवाह न करना
अब ये सब बहुत हो चुका,
छूटी खुशियाँ, छूटी कड़ियाँ
छूटे अनगिन पल जीवन के
साथ तुम्हारा माँग रहे हैं
प्यार तुम्हारा माँग रहे हैं
अब वो समय आ गया
उनका अधिकार उन्हें दे दो
उनका प्यार उन्हें दे दो.....!!!!

पर्यावरण दिवस

आओ अपनी आदत बदलें
पर्यावरण दिवस मनाएँ
पानी कम से कम खर्चें
और वृक्ष अधिक लगाएँ
पैदल चलें एक दिन सब
अपने वाहनों को आराम दें
अपनी बुद्धि के प्रयोग से
बिजली का भी खर्च बचाएँ।
कूड़ा फेंकें नियत जगह पर
खाद बनाएँ जैविक अपनी
साफ सफाई की परिभाषा
अपने घर तक ना हो सीमित
घर से निकले कबाड़ को भी
उपयोगी करके दिखलाएँ।
सामूहिक प्रयास के रंगों से
धरती को हरा-भरा बनाएं
इंद्रधनुष यूँ चमके नभ में
ये धरती अनुपम बन जाए
ऐसा फिर हो चमत्कार सा
स्वर्ग धरा पर ही आ जाए।
आओ अपनी आदत बदलें
पर्यावरण दिवस मनाएँ।

बहुत बुरा है

कुछ न कहना
बस अपने में ही
गुम रहना बहुत बुरा है
सुन कर भी
चुप-चुप रहना
कुछ भी
प्रतिक्रिया न देना भी
बहुत बुरा है
दूसरे की
कुछ भी न सुनना
अपनी ही
बस कहते रहना
क्या इससे भी
कुछ और बुरा है?

नहीं.....

न वर्तमान
न भविष्य
दूर-दूर तक
देखती हैं
आँखें
दिखता नहीं
कोई छोटा सा
छिद्र भी
जहाँ से प्रवेश
कर सके
कोई किरण
प्रकाश की।

चलो सभी एक पेड़ लगाएं--

हरी-भरी धरती हो अपनी
चलो सभी एक पेड़ लगाएं।

तुलसी, नीम, करी पत्ते का पौधा रोपे अपने घर में,
नींबू, आम, पपीते की खुशबु फैले पूरे घर में
सदाबहार लगाएं इतना मधुमेह न आने पाए।
चलो सभी एक.....।

चीड़ लगा कर हमने कितना देखो संकट है उपजाया,
यदि लगाते बांज के पौधे पहाड़ों का तन-मन हर्षाता
क्षणिक स्वार्थ हमने कितने अच्छे-अच्छे वृक्ष गवाएँ।
चलो सभी एक.....।

देखो अब भी देर नहीं है, संकल्प साध लो इसी समय पर,
सही समय पर नहीं जो चेते पछताना होगा जीवन भर
सभी एक सुर होकर, सोते लोगों की नींद उड़ाएँ।
चलो सभी एक.....।

तेरे-मेरे, इसके-उसके कहने से ही पेड़ लगे ना,
अपनी बुद्धि, सोच-समझ से धरती का श्रृंगार करो ना
अपनी प्यारी धरती माँ को हरी चुनर से खूब सजाएँ।
चलों सभी एक.....।

———————

पानी और वाणी

पानी और वाणी अपनी
मर्यादा कभी न छोड़ें
देख पराये लोगों को अपनी
सीमा कभी न तोड़ें
असंभव को संभव कर सबको
अपनी संस्कृति से जोड़ें
नेक राह की ओर चलें बस
सदा बदी से मुँह मोड़ें।

———————

जिसके लिए...

जिसके लिए काम बड़ा हो
जिसने रखा लक्ष्य बड़ा हो
उसके लिए राह के काँटे
सदा सुमन बना करते हैं
औरों के हित सदा जिये जो
औरों के हित सदा मरे जो
उसके बोल अशक्त जनों में
शक्ति संचार किया करते हैं
रहे किसी भू-भाग पर, सबके
हृदय सुवासित किया करते है
अपने सारे दुःख-दर्द भूला कर
दूजे के अश्रु नित पोंछा करते हैं।

———————

पाते...

अपना घर अपने बच्चे ही दिखते हैं
होते न माँ-बाप कहाँ से हम आते
उन्हीं घरों में लगते हैं ताले- कुंडे
जिन घरों में बुजुर्ग रह नहीं पाते
उन बच्चों का दुःख जाकर पूछे
कोई
दादी-नानी से जो कहानी सुन नहीं
पाते।
उन्हीं घरों में सूनापन है बिखरा
जहाँ नहीं है आशीर्वाद
बुजुर्गों का,..

———————

जाने कैसी...

जाने कैसी आग लगी मेरे शहर में
नशे में डूबे सारे लोग मेरे शहर में
इधर से उधर, उधर से इधर कहाँ
भाग रहे हैं सारे लोग मेरे शहर में
कौन है अपना कौन पराया ये भी
न जाने अब लोग मेरे शहर में
हवा में घुला जहर ये कैसा देखो तो
बनने लगा सामान मौत का मेरे
शहर में
जो धरती देती थी फूल आँगन में
देने लगी है कांटे अब मेरे शहर में।

———————

नव वर्ष

जिसमें
जीवन का
रंग नव
रूप नव हो
राग नव
साज नव हो
अर्थ नव
मूल्य नव हो
उत्साह नव
विश्वास नव हो
प्रत्येक पल
नेहमय
प्रत्येक पल
प्रेममय हो।

बालदिवस 2015

बढ़ो,
जीवन के
दुर्गम पर्वत चढ़ो।
मिलें बाधाएँ
रौंद उन्हें नव पथ गढ़ो।
दिखे कहीं
अन्याय, सहो न
आगे बढ़ लड़ो।
पथ अपना चुन,
उस पर अकेले ही बढ़ो।
अँधियारा,
डरना कैसा?
अपना दीपक आप बनो।
रंग भले ही
हों कितने भी
बस भोलापन चुनो।

एक बहाना...!

नयी सुबह जो लेकर आती
शाम उसे संग लेकर जाती
अपने अद्भुत रंगों में रंग कर
तब नयी सुबह को देने आती
उसे कहाँ और क्यों घबराना, यह जीने का है एक बहाना...!
मौन भी मेरा मुखर नहीं है
शब्दों में भी तो धार नहीं है
तब भी क्यों चुभते हैं काँटे
इसका मुझको पता नहीं है
अपना अस्तित्व मिटा कर
होगा कुछ अनमोल बताना, यह जीने का है एक बहाना...!
अपनों के हित त्याग किये जो
वो भूले से भी मत दोहराओ
कर्तव्य किये बस पूरे अपने
अपने को बस यही समझाओ
सोच यही अपना कर जीवन
में बस आगे आगे बढ़ते जाना, यह जीने का है एक बहाना....!
तानों के जब तीर चलें तो
सुनना उनको और चुप रहना
धरती की भाँति बस उनको
अपने मन में ही रख लेना
घोर अंधेरा बढ़े तो समझो
निश्चित है सुबह का आना, यह जीने का एक बहाना....!

———————-

जन्मदिवस

जन्मदिवस भी
क्या चीज है
चाहो न चाहो
हठी आ ही जाता है
ठीक रात के बारह बजे
धीमे से
प्रवेश करता है
कमरे में
जहाँ सोयी रहती हूँ मैं!
दुबका रहता है
एक कोने में
मेरे जागने तक...!
सुबह आँख खुलते ही
देकर शुभकामनाएँ
धीमे से कानों में कहता है
लो जी!
हो गये अब तुम
एक वर्ष और बड़े...!
मस्त रहोगे
आज तो अपने मित्रों संग
खुशियाँ सहेजने में
पर, सोने से पहले
इस पर भी कुछ सोचना
अपना सोचा
कितना किया
कितना है बाकी,
बाकी में कुछ नया जोड़ना
तब उसे करने में लगना....!
ये जन्मदिवस
हर वर्ष आयेगा
आने पर बहुत रुलायेगा
जब नहीं किये कामों का
अंबार दिखेगा....!
तो,अभी मैं जाकर
अगले वर्ष पुनः आता हूँ
मेरा कहा गुनना
थोड़ा कहा अधिक समझना
बोलना कम, करना अधिक
संभव हो तो औरों को भी
ये मूल मंत्र
देना जीवन का.....!!!!

———————

चल उदासियाँ छोड़....

चल
उदासियाँ छोड़
नया कुछ
जीवन में अब जोड़..!
बस, विक्रम की
करें सवारी
भटकें इधर-उधर
ऑटो रिक्शा भी
क्यों छोड़ें
साइकिल से भी
नाता जोड़....!
बन के सपना
दौड़ रहा जो
आ उस बचपन को
फिर जी लें
बारिश में
जो भरती थी नाली
चलो चलायें
कश्ती उसमें कागज वाली
किसकी डूबी
किसकी उतरी पार
चल करें
फिर से जोड़-तोड़...!
चल अब
अपनी राह बदल लें
मुरझाए, शाख़ों से टूटे
फूलों-पत्तों से बतिया कर
आ उनसे
गलबहियाँ कर लें
उन्हें लगे न
सबके जैसे तुमने भी
लिया है नाता तोड़....!
इधर-उधर
न जाने किधर
सब भाग रहें हैं जाने क्यों
चल
निकल चलें
अब अभी यहीं से
लील न जाये
ये अंधी दौड़...!!

———————

मैं हिमालय

मैं हिमालय!
केवल बर्फ का
पहाड़ नहीं,
देश का प्रहरी
राष्ट्र सेवा में अहर्निश लीन
क्या तुम मेरा
दुख समझते हो?
अपना देश है ऐसा
जिसे मिले हैं बहुत से
प्राकृतिक संसाधन
अब यह तुम पर है
कितनी जल्दी
छोड़ोगे इनका दोहन,
अपनी आदत के चलते
नष्ट किया तुमने
प्राकृतिक सौंदर्य,
अपने घर तो ख़ूब सजाये
बाहर गंदगी बिखरायी सबने
दैवी आपदा
समझा जिसको
वह तुम सबका ही
किया धरा था
पर, अब भी
कहता हूँ तुमसे
उठो, जागो
लो जिम्मेदारी
सब करें पहल
सब करें प्रयास
सब चलें साथ
नये तौर-तरीके अपना कर
पथ प्रशस्त बनायें,
केवल प्रतिज्ञा ले
दिवस मना कर
बिना किये कुछ
दोषारोपण करते
देखते ही न रह जायें..!!!!!

———————

समय से पहले

हर उम्मदराज
व्यक्ति को
समेट लेना चाहिए
समय से पहले
स्वयं को,
गहरे तक
डूब जाना चाहिए
अपने खोये उन सपनों में
जो समय रहते
पूरा नहीं कर पाया
दुनियादारी,
जिम्मेदारी निभाने में,
खोये सपनों को जीने में,
खोयी खुशियों की
खोज में जियेगा
अपनी ऊर्जा को
समेट कर
बच पायेगा तभी
हाशिये में सिमटने से...
वरना कौन सोचता है
उम्मदराज व्यक्ति की
खोयी खुशियों
सपनों और उसके
स्वयं के बारे में...???

———————

मन चरवाहा

मन चरवाहा
खड़ा यहीं है
व्यथा- कथाएँ
छिपी कहीं हैं
आँखमिचौली में
अब देखें
किसकी जीत
लिखी गयी है..!!!

———————

यही कहें....

आँधियों में
भी न उखड़ें
ऐसा पेड़ बनें,
बाधाओं में
सीना तानें
पर्वतराज बनें,
सबको
अपने में समेट कर
गंगा बनें-बहें,
जीवन
ऐसा होता है
चल सबसे यही कहें।

———————-

रिश्ते

रिश्तों की इस भीड़ में कितने
खोये, भूले, बेगाने, अपने से
उनकी पीड़ा जान ले जो भी
उसी हृदय में बसते रिश्ते हैं।
उन रिश्तों की बात करें क्या
जिनमें खोट-घात हिलोरे मारे
दे जाते संदेश सभी को देखो
जग में ऐसे भी रिश्ते होते हैं।
विश्वास कमाये जो लोगों का
अपने सद् व्यवहार के बल पर
परपीड़ा अपनाये आगे बढ़ कर
बस वो ही सच्चे रिश्ते होते हैं।

धनतेरस

धन-धान्य से भरें घर-बार
इतना मिले सभी को
अपने लिए बचा कर थोड़ा
बाँटे सब निर्धन को
उनके घर भी खुशियाँ आयें
वे भी सपने देखें
आयें दिन ऐसा भी सबके
घर में दीप जलें घी के।

हो ऐसी हर बार दिवाली

सब खुशियों के दीप जलायें
रंगोली फूलों से घर सजायें
प्रेम और विश्वास के रंगों से
सबके सब सपने सच हो जायें
कुछ सपने नयी उड़ान भरवायें
हो ऐसी हर बार दिवाली.....
महलों से कुटिया तक सबके
मन और घर जगमग हो जायें
बच्चे, बूढ़े और जवान सभी के
मन सतरंगी से गीत गुनगुनायें
झूमें, नाचें, गायें शोर मचायें
हो ऐसी हर बार दिवाली.....
जब भी चलायें लोग पटाखे
पशु-पक्षी का हित भी सोचें
त्योहार मने, फैले न गंदगी
पर्यावरण भी तो रहे सुरक्षित
ऐसी समझ सभी में जग जाये
हो ऐसी हर बार दिवाली.....

उत्तराखंड

जिनके त्याग-समर्पण से
यह राज्य अस्तित्व में आया
उसका मूल्य चुकाने का यह
अब स्वर्णिम अवसर आया।
जितने सपने पले आँख में
उनको पूरा करना है अब
उत्थान-विकास के लिए
अनोखे रंगों से भरना है।
प्रश्न अभी कुछ बाकी हैं
जिनके उत्तर मिलने हैं
पीड़ाओं के दुर्गम पर्वत
क्या कभी नहीं हिलने हैं?
नहीं पलायन रुकता है जो
उस ओर दृष्टि भी दौड़ायें
पर्वत जन की पीड़ा हरने
हम भी कुछ क़दम बढ़ायें।
चलें साथ में सबको लेकर
तब ही कुछ सम्भव होगा
एक अकेला कर पाया क्या
सबको मिलकर करना होगा।
अपनी विरासतें और संस्कृति
सहेजना हो मूलमंत्र अपना
भूल रहे जो, वो याद दिलायें
सबका बस हो यही सपना।
आज स्थापना दिवस मनाते
बिखरें है रंग अपनी धरती पर
दूर खड़े जो देख रहे हैं, आओ
स्वागत सबका आज यहाँ पर।

———————-

नया सूरज उगायें

दिलों में जहाँ भी अंधेरे छिपे हैं
चलकर वहाँ नया सूरज उगायें
कमी हो रही गौरैया की जहाँ में
बचा कर उन्हें, कुछ घोंसले बनायें
पत्थरों से चोट लगती थी हमेशा
मगर फूलों ने भी निशाने लगाये
बड़े घर के मालिक, दिलों के छोटे
कहें क्या उन्हें, खुद दीवारें गिरायें
उन्हें दे सहारा जो खुद हैं बेसहारा
हँसी देकर लबों को दुआ कमायें
जीवन है कितना ये भी न सोचा
यूँ ही बेवजह लगा ली आशायें
रोती माँ के बहते आँसू सुखा कर
चलो इस तरह मकर संक्रांति मनायें।

कुछ दिन

कुछ दिन
शब्द करें आराम
समाधि में जायें,
फिर जब
मिलें अनुभव
अपने बतलायें,
मौन और
शब्दों की ताकत से
परिचित करवायें,
परिवर्तन की
बयार तभी बहेगी
अपनी गाथा
स्वयं कहेगी।

गुलाब

०१—-
आज बनें गुलाब सब
किसी अपने के लिए,
अपने प्राणों से अधिक
प्यारे सपने के लिए।
०२—
गुलाब बन कर मुस्करायें
कुछ इस तरह,
सुगंध बिखर जाये सर्वत्र
बस इस तरह।

———————

सीमायें

शब्द मौन
और मौन मुखर हो
जिसे बोलना
उसे खबर हो
सुनने वालों की तो
होती तय सीमायें।
लक्ष्य एक
संकल्प सुदृढ़ हो
जिसे हो चलना
उनकी इच्छाशक्ति बड़ी हो
आने वाली बाधाओं की भी
होती तय सीमायें।

———————

जीवन

०१—-
आधा जीवन जी चुकने पर
समझ न पाये जीवन क्या है,
जब तक समझें जीवन को
वो आधा भी बचा कहाँ है?
०२—
मेरा जीवन केवल मेरा है
जो यह सोचे मूढ़ बड़ा वो,
अपना नहीं यहाँ कुछ भी
जो जाने गुणवान बड़ा वो!

———————-

हाथ

संभावनाओं
सफलताओं का
आकाश कितना बड़ा है
उसे पाने वाले हाथ
कितने छोटे-छोटे,
सपनों का संग
परिश्रम का रंग
दोनों मिलेंगे तो
सिमट ही आयेगा
आकाश
इन छोटे-नन्हें हाथों में।

———————

अंदाज

रिश्तों को
जीने का
एक मोहक
अलग अंदाज
इससे बढ़ कर
क्या होगा भला?
हम जैसे हैं
वैसे ही रहें,
अपनी दुनिया
बदल जाये
और पता भी न चले।

———————

पता ही न चला

अनकही
संवेदनाओं की धरा को
सींचते- सहेजते
मन के पृष्ठों पर आकार लेते
ये आखर कब मीत गए
पता ही न चला....
रंगो से खेलते हाथों के साथ
ये रंग कब जीवन बन
साथ चलने लगे
पता ही न चला...!
घर की बगिया को सींचते
खिलखिलाते-हँसाते
ये पौधे कब संतान गए
पता ही न चला...!
मिले कुछ कदम
साथ चले बस
पर, कब तुम मेरी
जान बन गए पता ही न चला.....!!

———————

दोस्ती

०१—-
सवेरे की दूधिया हँसी सी
दोपहर की सुनहरी गर्मी सी,
संध्या की लालिमा तन पर
शुभ रंगों का संयोजन दोस्ती!
०२—
ऊबड़-खाबड़ पगडंडी से
लड़ती-मिलती चले दोस्ती,
बिना कहे समझ ले मन की
साथ निभाती सदा दोस्ती!
०३—
झर-झर झरते झरने जैसी
उठती-गिरती नदिया जैसी
हरी-भरी सरसों सी प्यारी
इठला-इतरा चली दोस्ती!
०४—
सवेरे की उजली किरन दोस्ती
सर-सर चलती सी हवा दोस्ती,
नाचती-गाती नदिया के जैसी
अपनी पर्वत जैसी चट्टान दोस्ती!
———————

मसूरी

भीड़ की रेलमपेल
वाहनों की भरमार
स्वच्छंद घूमना
हुआ मुहाल बदले लोग
प्राकृतिकता हुई गुम
कृत्रिमता का लबादा
ओढ़े मसूरी
अपनी लगे कम
पर्यटकों की ज्यादा
यहाँ घूमने का अब
मन रह गया आधा।

लक्ष्मण रेखा

स्वयं खींचे
निज
लक्ष्मण रेखा
लक्ष्य पाने की
अपनी यात्रा में
गिरने लगें तो
थामने को
हाथ
कोई तो रहे...!!!!
————————-

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- डॉ.भारती वर्मा बौड़ाई
माँ	- श्रीमती कमला वर्मा
पिता	- बाबूराम वर्मा
जन्म स्थान	- देहरादून (उत्तराखण्ड)
जन्मतिथि	- 04 अक्टूबर 1957
शैक्षिक योग्यता	- एम.ए. (हिन्दी साहित्य), बी.एड., डी.फिल.(शोध द्वारा - गद्यकार बच्चन : एक आलोचनात्मक अध्ययन)
जीवन संगी	- श्री राकेश आनंद बौड़ाई
संतान	- दो (एक आत्मजा, एक आत्मज)
व्यवसाय	- 24 वर्ष तक अरुणाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग में अध्यापन। अक्टूबर 2005 मे स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली।
संप्रति	- स्वतंत्र अध्ययन और लेखन
निवास स्थान	- ''प्राच्य शिखर'' 95, दिव्य विहार, डांडा धर्मपुर, डाकघर - नेहरुग्राम, देहरादुन उत्तराखण्ड, पिन - 248001
फोन नं.	- 9759252537
मेल आई.डी.	- bharati.bourai007@gmail.com
प्रकाशित एकल पुस्तकें	- (1) कविता का अरुणांचल (कविता संग्रह) 1985 (2) बच्चन साहित्य : अध्ययन का उपक्रम (आलोचना) 1998 (3) सृजन समीक्षा 2018 (4) उपहार (काव्य संग्रह) (5) रंगों के साथ (काव्य संग्रह) (6) अंतर्मन की यात्राएँ (काव्य संग्रह) (7) आखर मीत (काव्य संग्रह)
प्रकाशित साक्षा संग्रह	- 18 साझा संग्रहों में रचनाएँ प्रकाशित
पत्र पत्रिकाएं	- लगभग 70 पत्र-पत्रिकाओं, ई पत्रिका, ब्लॉग में रचनाएँ प्रकाशित
सम्मान	- वाणिज्य मंत्री (वर्तमान रक्षा मंत्री) निर्मला सीतारमण सहित विभिन्न संस्थाओं, प्रकाशनों द्वारा लगभग 12 सम्मानों से सम्मानित
सामाजिक क्षेत्र	- अपने पति के ''अविराम प्रवाह ट्रस्ट'' द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों में सहयोग।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-81-937811-0-4

मूल्य- 65/-